आचार्य तुलसी की 97वीं जन्म जयन्ती समारोह

भ्रष्टाचार से पहले भय और भूख का समाधान जरूरी

- आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 7 नवम्बर, 2010

भ्रष्टाचार रूपी समस्या के कारण जहां चारों ओर हाय तोबा मनी हुई है वहीं आचार्य महाश्रमण ने भ्रष्टाचारा से पहले भय और भूख की समस्या का समाधान करना जरूरी बताया है। उन्होंने आचार्य तुलसी की 97वीं जन्म जयन्ती समारोह में राजनीतिज्ञों की उपस्थिति में कहा कि भ्रष्टाचार मेरी दृष्टि से ज्यादा खतरनाक समस्या नहीं है। उससे ज्यादा देश को खोखला करने वाली समस्या भूख की और भय की है। व्यक्ति आज आतंकवाद, नक्सलवाद आदि विपदाओं से भयभीत होने के साथ अन्य अनेक कारणों से भयभीत रहता है। भय जब तक रहेगा तब तक वह सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता। भूख के कारण भी हिन्दुस्तान पिछड़ रहा है। इन दोनों का समाधान हमारे सामने है। भय को दूर करने में अणुव्रत कारगर साबित हो सकता है तो भूख की समस्या का समाधान अहिंसा समवाय में निहित है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य तुलसी का जन्म दिन अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया जाता है। अणुव्रत नैतिकता का सन्देश देता है। जब राजनीतिज्ञों और अफसरशाही में नैतिकता पुष्ट होती तो भ्रष्टाचार का समाधान संभव हो जायेगा। उन्होंने 30 वर्षों पूर्व आचार्य तुलसी के जन्म दिवस पर ही हुए समण श्रेणी के उद्‌भव की भी चर्चा की।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य तुलसी ने नया चिंतन नये प्रयोग किये। उन्होंने स्वयं प्रायोगिक जीवन जीया और दूसरों को प्रेरणा दी। उन्होंने जो बीत गया उस पर खेद न करने और आने वाले के लिए चिन्तित न होने का सूत्र दिया।

इस अवसर पर मुज्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, साध्वी चारित्रयशा, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा, समणी कुसुमप्रज्ञा, समणी निर्मलप्रज्ञा, स्थानीय विधायक अशोक पींचा, स्थानीय सभा अध्यक्ष अशोक नाहटा, तारानगर क्षेत्रीय विधाय एवं पूर्व सार्वजनिक निर्माण मंत्री राजेन्द्र राठौड़ उपस्थित हुए और उन्होंने अपना विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।